छोटी लड़की और जॉन म्यूर

योसेमटी घाटी की भव्यता के विषय में 1868 में कुछ ही साहसी लोगों को जानकारी थी. इस घाटी में पर्यटन की बढ़ावा देने वालों में सबसे अग्रणी इंग्लिश पत्रकार, जेम्स हचिंग्स, था, जिसकी बेटी फ्लॉय वहां जन्म लेने वाली पहली श्वेत बच्ची थी. यह उत्साही लड़की, जिसे स्क्विरल (गिलहरी) के नाम से जाना जाता था, अधिकतर समय अपनी देखभाल स्वयं ही करती थी. मेहमान तो उसे ऊधमी और बेलगाम समझते थे. जब उसके पिता ने जॉन म्यूर को होटल और आरा-मशीन चलाने के लिये काम पर रखा तो फ्लॉय परछाई की तरह उसके पीछे रहती. म्यूर ताकतवर और सक्षम युवक था जो फूलों से बातें करता था, बर्फ की आवाज़ सुनता था, हवा को देखता था. फ्लॉय बड़ी न होना चाहती थी क्योंकि बड़े होकर वह एक सभ्य महिला नहीं बनना चाहती थी. म्यूर सामाजिक बन्धनों से दूर, प्रकृति के निकट रहना चाहता था. दोनों को योसेमटी घाटी में अपने जीवन का ध्येय मिला. म्यूर ने फ्लॉय को प्रकृति को जानना और समझना सिखाया.

यह कहानी उन व्यक्तियों की है जिन्होंने प्रकृति से एक गहरा सम्बन्ध स्थापित किया.

छोटी लड़की

और जॉन म्यूर

जेम्स हचिंग्स

एलविरा हचिंग्स

फलॉय हचिंग्स

Floy Hutchings

कोसी हचिंग्स

मिसेज़ स्प्राउट और विलियम हचिंग्स
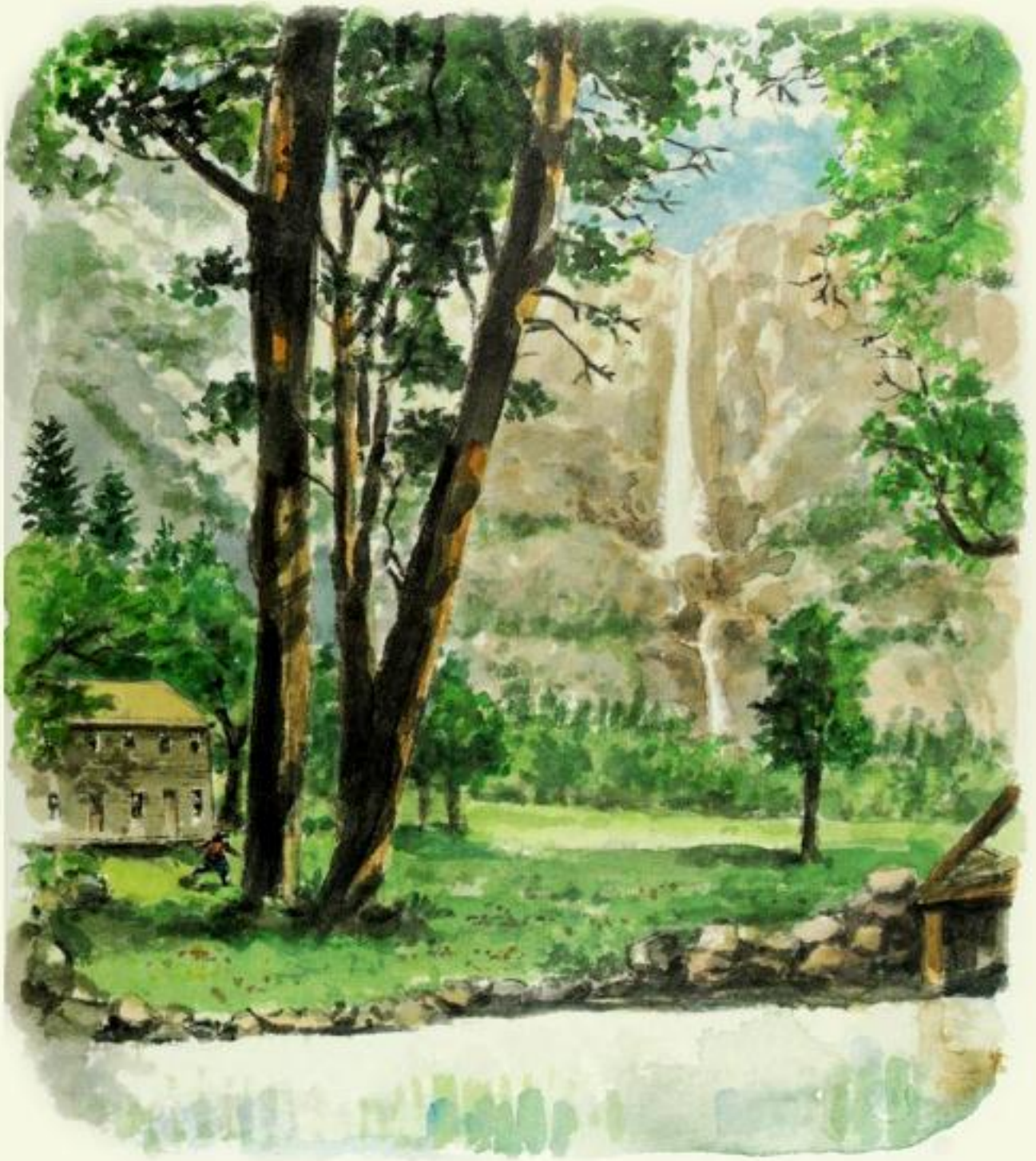
पर्वतों की तलहटी में स्थित, गलीचे समान फैली, एक अलग-थलग घाटी में हचिंग्स का एक सामन्य-सा घर था. उस घर को जेम्स हचिंग्स चलाते थे. उनके साथ उनकी पत्नी, एलविरा, और उसकी माँ, मिसेज़ स्प्राउट, रहती थीं. उनके तीन बच्चे थे, बेटी फलॉय, उसकी बहन कोसी और छोटा भाई विलियम.

फ्लॉय, योसेमटी घाटी में जन्म लेने वाली पहली श्वेत सन्तान थी. वह एक गिलहरी समान यहाँ-वहाँ भागती रहती थी, इसलिये उसके पापा उसे स्किवरल बुलाते थे. पापा कहते थे कि योसेमटी घाटी दुनिया में सबसे सुंदर जगह थी. फ्लॉय ने तो कोई और जगह देखी ही न थी.
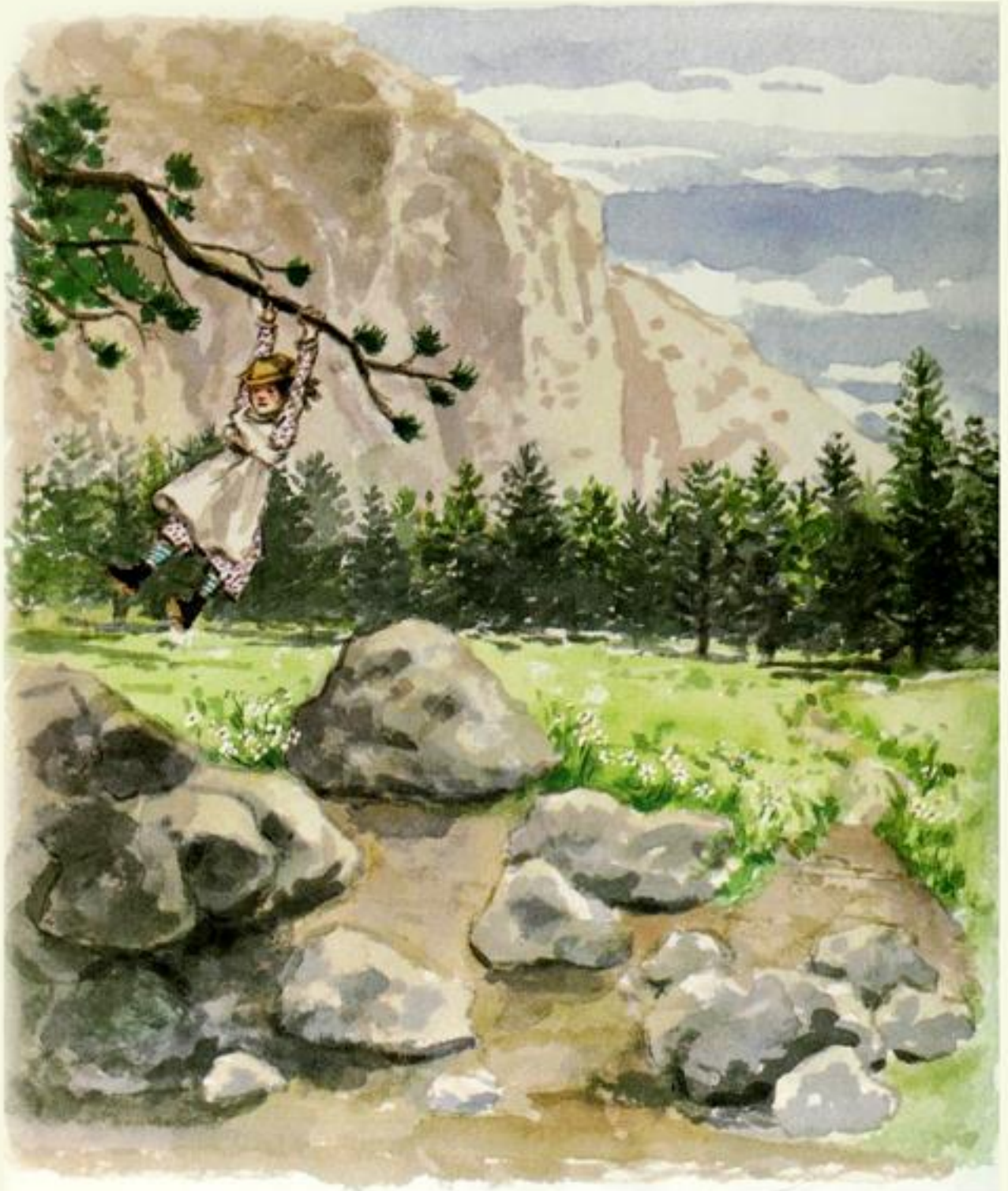
परिवार के पालतू तोते से बातें करके, लकड़ी के ढेर के पास रखे तख्ते पर संतुलन बना कर, मेंढकों को पकड़ कर और मिट्टी की रोटियां बनाकर फलॉय अपना समय व्यतीत करती थी.
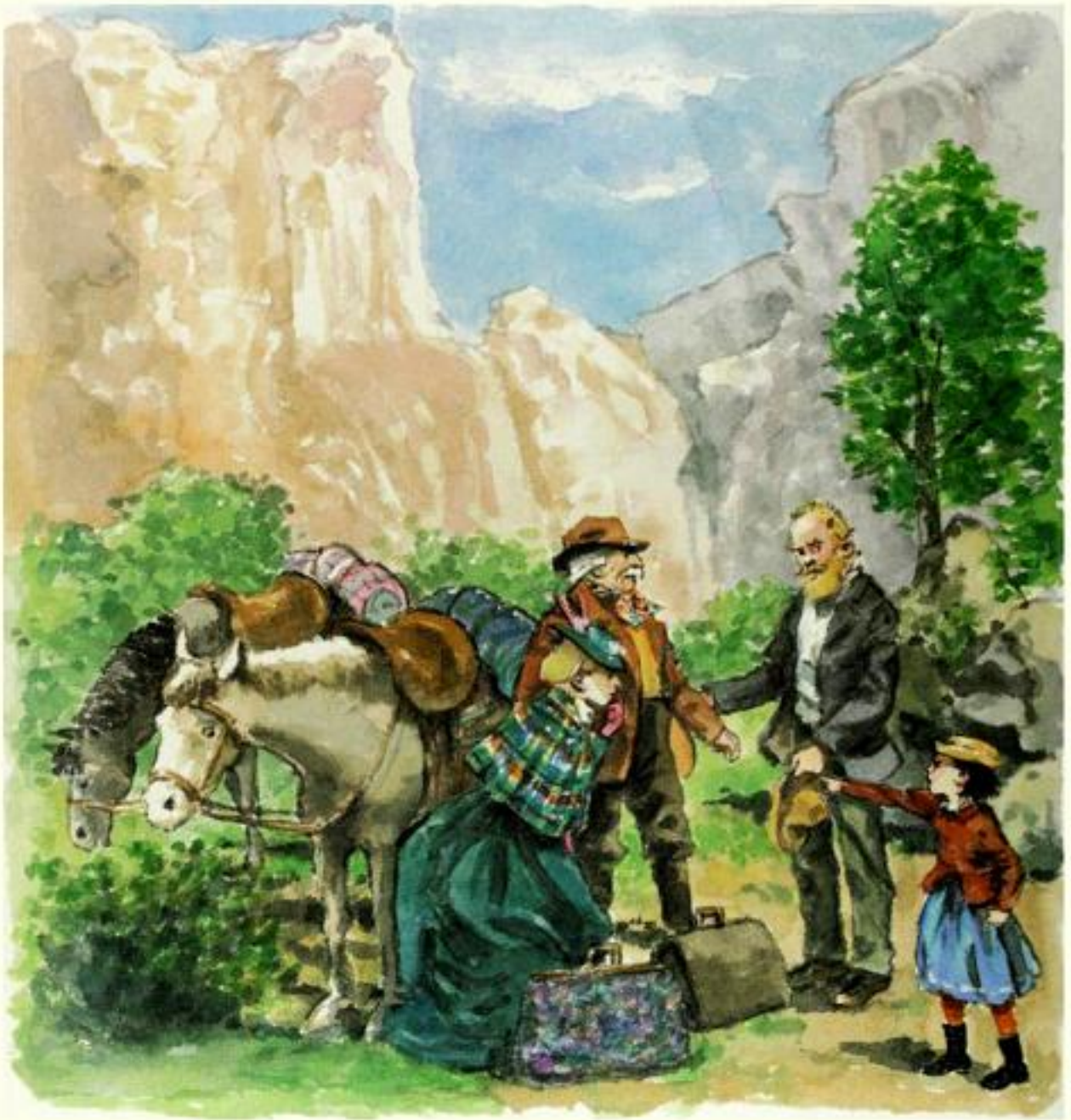
पापा पत्रिकाओं में लेख लिखते थे जिन्हें पढ़ कर लोग घाटी की सुन्दरता देखने के लिये उत्साहित होते थे. घोड़ों पर एक कठिन यात्रा करने के बाद लोग वहां आते थे, होटल में रुकते थे और पापा के साथ भ्रमण पर जाते थे.

फलॉय पर्यटकों के पास दौड़ी आती थी और पूछती थी, “आप क्यों आये हैं? क्या आप साँपों से डरते हैं? मुझे डर नहीं लगता. अगर सांप आपको काट लें तो मैं आपको बचा लूंगी. भालू से डरते हैं?” फिर वह उन पर गुर्राती.

“कैसी अनोखी लड़की है?” वह बुदबुदाते.

फलॉय, पापा के साथ जाती थी. लेकिन एक बार पर्यटकों की एक टोली बहुत ही सुस्त थी तो फलॉय उनको छोड़ कर अकेले ही हिरणों के पथ पर चली गई थी और अँधेरा होने के बाद ही मिली थी.

"मैं तुम्हारा और पर्यटकों का ध्यान एक साथ नहीं रख सकता!" पापा बोले. "अब से तुम्हें घर में ही रहना होगा."

एक बार अस्तबल के कुछ लड़कों ने उसे ऐसे घोड़े की सवारी करने की चुनौती दी जो अभी प्रशिक्षित न हुआ था.

"तुम कहाँ थी, जंगली लड़की!' नानी ने चिल्ला कर कहा. "उसके पहले कि मेहमान तुम्हें देखें, साफ़ होकर आओ."

रात में पापा मेहमानों को शेक्सपियर के नाटक पढ़ के सुनाते. बाद में फलॉय उन्हें कपड़े बदलते हुए देखती.

एक दिन एक महिला ने उसे झांकते हुए पाया तो उसने शिकायत की. “मिस्टर हचिंग्स, आपकी लड़की तो पूरी जंगली है!”

पापा ने तय कि होटल में दीवारें बना कर मेहमानों को अलग-अलग कमरे देने होंगे. वह पानी से चलने वाली एक आरा-मशीन ले आये. लेकिन इस मशीन को वह अकेले नहीं चला पाए और होटल में कोई सुधार न ला पाए.

एक दिन एक आदमी टहलते हुए होटल में आया, जैसे विधाता ने ही उसे वहां भेजा था. “मैं जॉन म्यूर हूँ,” उसने कहा. “मैं काम की तलाश में हूँ.”

“यही उपयुक्त आदमी है,” उसके साथ बात करने के बाद पापा ने चिल्ला कर कहा. “वह आरा चलाता है, बढ़ई है, आविष्कारक है!”
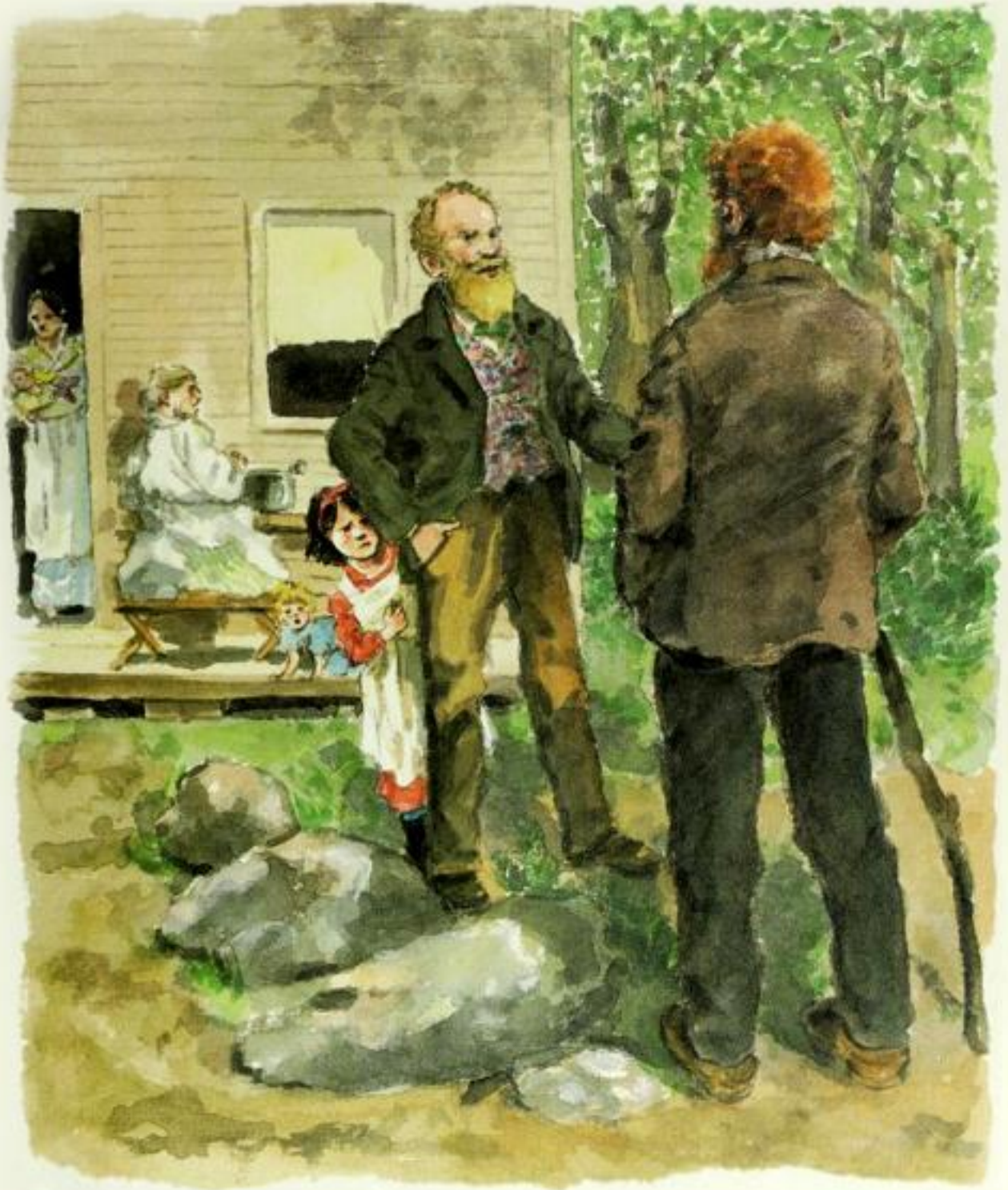
फलॉय उसके सामने एक छिपकली झुलाने लगी. यह देख पर्यटक महिलायें चिल्लाने लगीं.

“हेलो, छोटी छिपकली,” म्यूर ने कहा. फलॉय से उसने कहा, “मुझे लगता है कि वह स्वतंत्र रहना चाहती है, हमारी तरह.”

फलॉय ने उसे घूर कर देखा और छिपकली को ज़मीन पर रख दिया.

“उन्हें तंग मत करो,” पापा ने कहा.

पापा और जॉन म्यूर ने आरा-मशीन को लगा दिया और लकड़ी के तख्ते काटने लगे. जॉन म्यूर ने अपने लिए एक छोटा-सा घर बनाया. अपने बिस्तर को उसने छत से लटका दिया, नीचे फर्श पर पानी की एक धारा बहने दी.
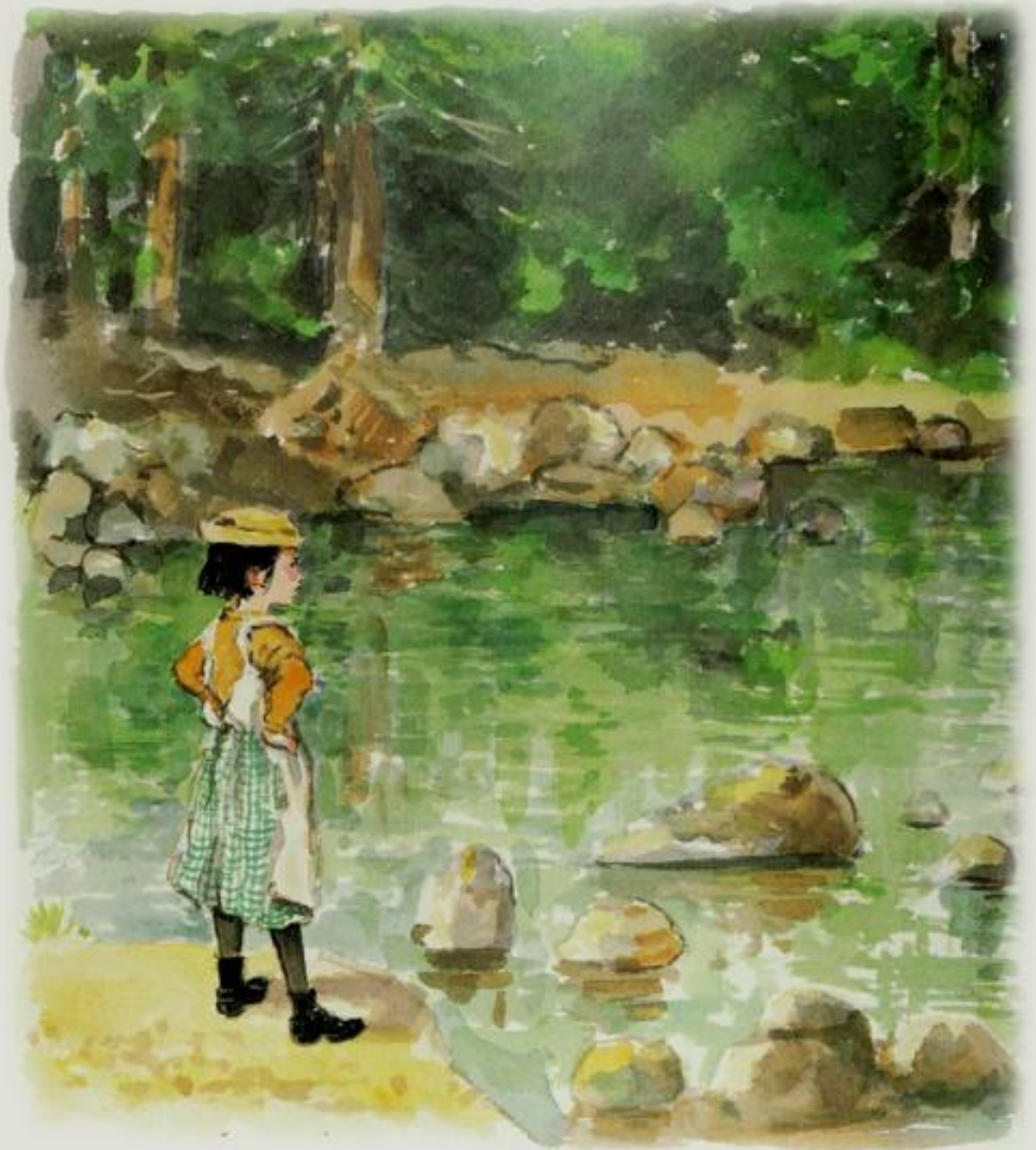
जॉन म्यूर मेहनत से काम करता था. लेकिन घाटी में घूमने के लिये वह समय निकाल लेता था. एक दिन फलॉय उसके पीछे-पीछे नदी किनारे चलती रही. वह धारा की बीच आ गया और एक चट्टान पर लेट गया. कुछ मिनटों के बाद फलॉय चुप न रह पाई.

“आप क्या कर रहे हैं,” उसने चिल्ला कर पूछा.

“मैं यह जानने का प्रयास कर रहा हूँ कि नदी में एक चट्टान होने पर कैसा महसूस होता है,” म्यूर ने कहा.
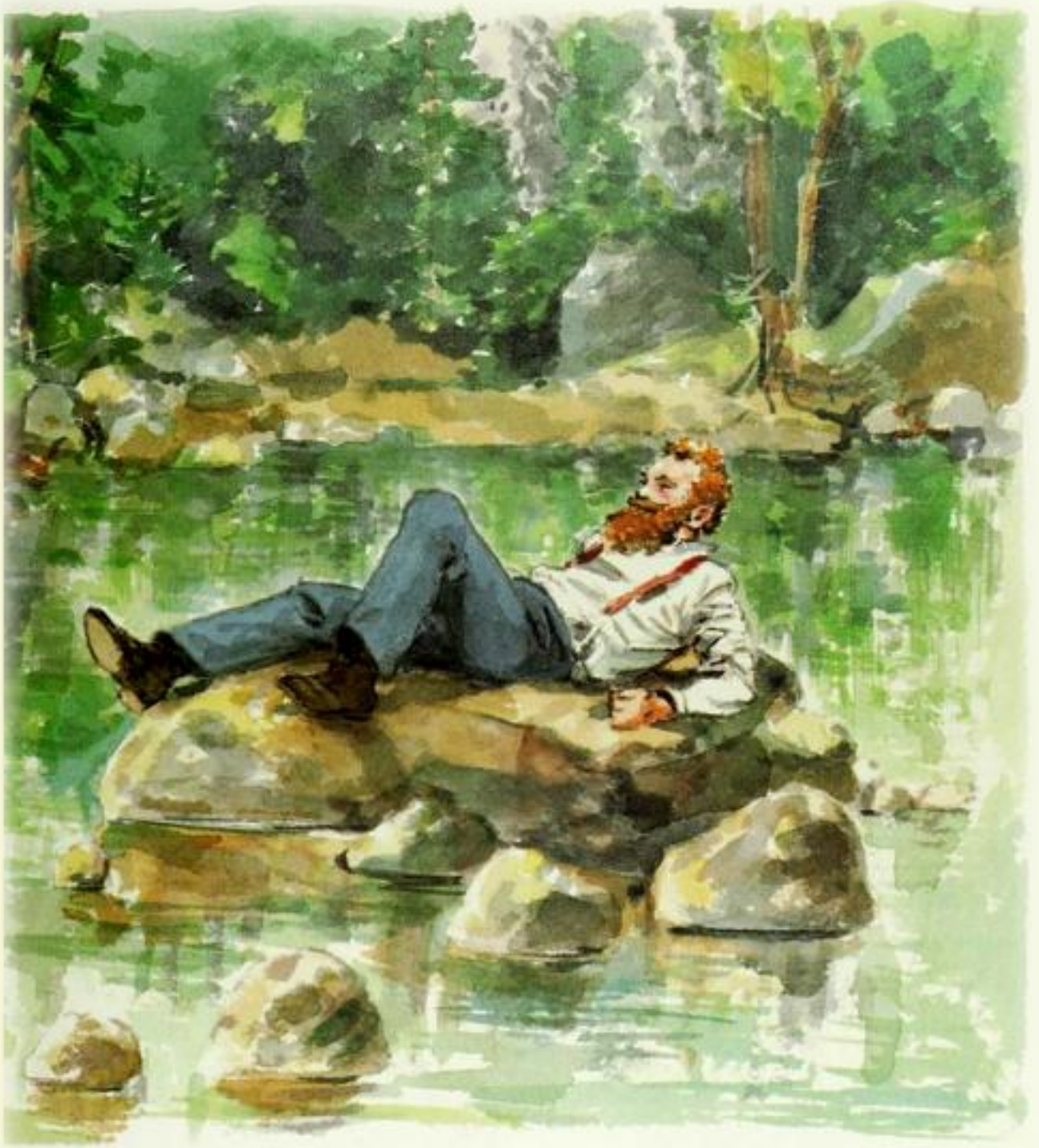
“चट्टानें तो महसूस नहीं कर सकतीं?” वह बोली.

“शायद करती हों. हम जानते नहीं कि हम उन से पूछे कैसे?” वह बोला.

“क्या आप पागल हैं?” फलॉय ने पूछा.

जॉन म्यूर हंस दिया.

नानी स्प्राउट मौसम की भविष्यवाणी करना जानती थी. जब नानी ने कहा की बर्फ पड़ने वाली है तो जॉन म्यूर ऐसे बाहर भागा जैसे उसके घर में आग लग गई थी.

“आप कहां जा रहे हैं?” फलॉय ने पूछा.

“मैं स्नो-फ्लेक्स के गिरने की आवाज़ सुनने जा रहा हूँ,” वह बोला.
“मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा,” फलॉय ने कहा.
“अभी तुम पूरी तरह खामोश नहीं हो,” म्यूर ने भागते हुए कहा.

वसंत ऋतु में जब घाटी में हर जगह फूल खिल जाते तब फलॉय ने जॉन म्यूर को उन्हें छेड़ते हुए सुना.

“अब बताओ, प्यारे नीली आँखों वाले, तुम यहाँ कैसे आ गये? उसने एक फूल से कहा. “क्या पिछले वर्ष मैंने तुम्हें मीलों दूर नहीं देखा था?” उसने अपनी जेबों में, अपनी झोली में, अपने रुमाल में बहुत सारे फूल, पत्ते, टहनियां और कंकड़ भर लिये थे.
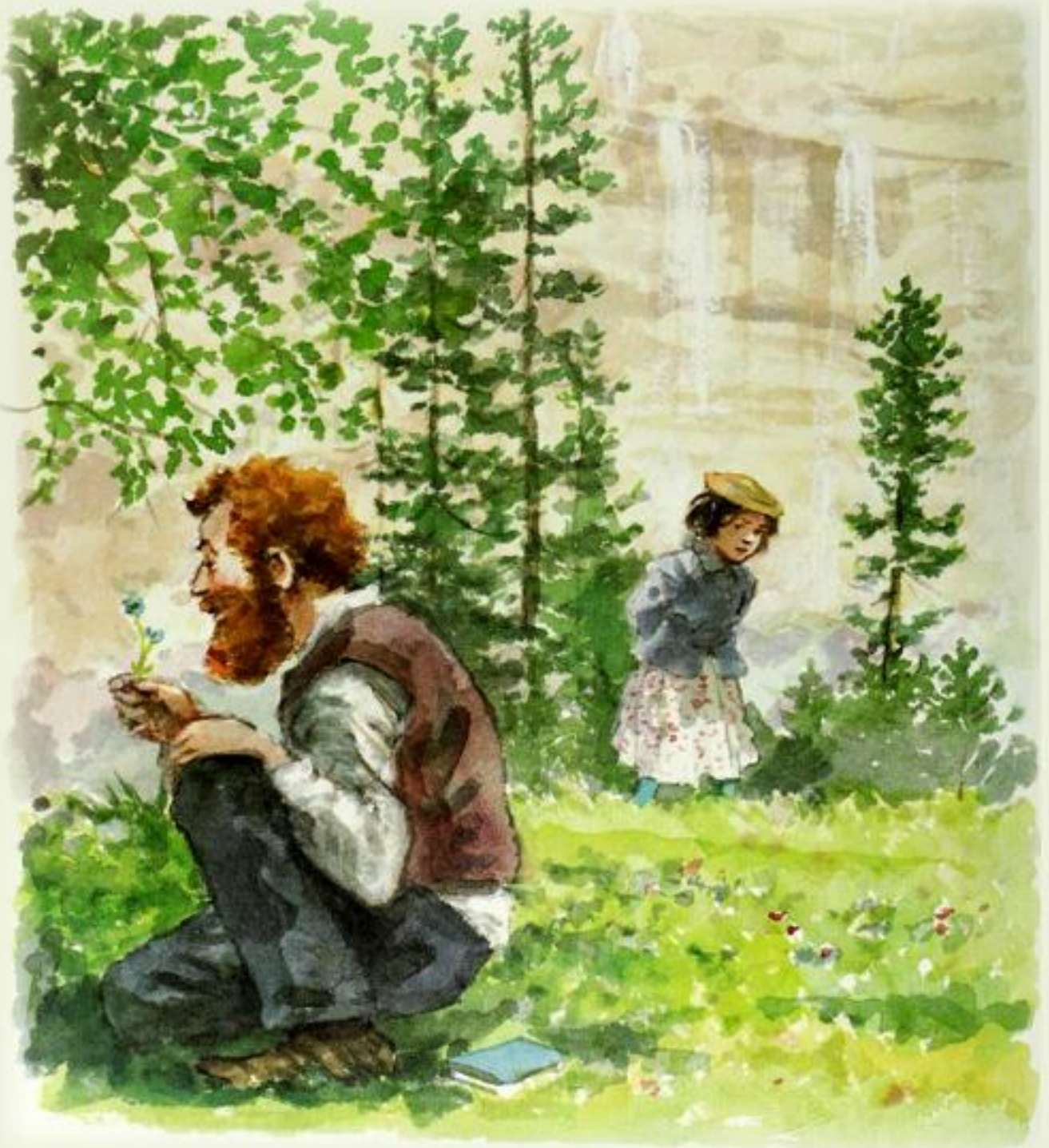
एक उमस भरी दुपहर में गरजने वाल तूफ़ान आया और छोटी कोसी को रुला गया.

“डरो नहीं,” म्यूर ने प्यार से कहा. “तूफ़ान तो प्रकृति की शान होते हैं.” उसने अपनी जैकेट पहन ली.

“क्या आप बाहर जा रहे हैं?” फलॉय ने पूछा.

“इस तेज़ हवा में मैं पेड़ों को गाते सुनना चाहता हूँ,” उसने कहा. फलॉय ने घर के अंदर से ही उसे एक पेड़ पर चढ़ते हुए देखा. वह डाल को पकड़े इधर-उधर झूल रहा था, वैसे ही जैसे एक बौबोलिंक पक्षी किसी पतले बेंत पर बैठ झूलता है.

“यह आदमी तो एक स्कूली लड़के जैसा व्यवहार करता है,” पापा बोले.

जब उसे छुट्टी मिलती तो वह पहाड़ों पर चढ़ने लगता. फलॉय उसे तब तक देखती जब तक की वह दृष्टि से ओझल नहीं हो जाता था. घंटों बाद वह कूदता हुआ नीचे आता.

“आप ऊपर क्या करते हैं?” फलॉय ने पूछा.

“मैं देखता हूँ,” उसने कहा.

“अरे, वह तो कोई बात न हुई,” फलॉय बोली.

जॉन म्यूर घुटनों के बल बैठ गया. “यह देखो,” उसने कहा.

“यह तो बस कुछ चींटियाँ हैं,” फलॉय ने उत्तर दिया.

“अब दुबारा देखो,” उसने फलॉय को एक मैग्नीफाइंग ग्लास देते हुए कहा.

फलॉय चकित हो गई, एक बड़ी चींटी एक पत्ते को काट रही थी.

“यहाँ इन निशानों के देखो,” म्यूर ने कहा.

“मुझे दिखाई नहीं देता,” फलॉय बोली.

“टिड्डा,” म्यूर बोला. “अब, कहाँ गया?”

“वहां,” फलॉय ने उसे कूदते देखा तो चिल्लाई.

फलॉय मंत्रमुग्ध हो गईं. मैग्नीफाइंग ग्लास का प्रयोग कर वह पत्तों के नीचे बैठे कीड़ों को देखती, ओस की बूँद देखती जिस में पूरा संसार समाया लगता.

जॉन म्यूर ने उसे जानवरों, पक्षियों और पौधों के नाम बताये और बताया की कैसे वह सब कुछ सुन लेता था जो वह उसे कहते थे.

“जो कुछ भी पास में है और छोटा है, उसे देखना तुम ने सीख लिया है,” उसने कहा. “अब हम पर्वतों को देखेंगे.”
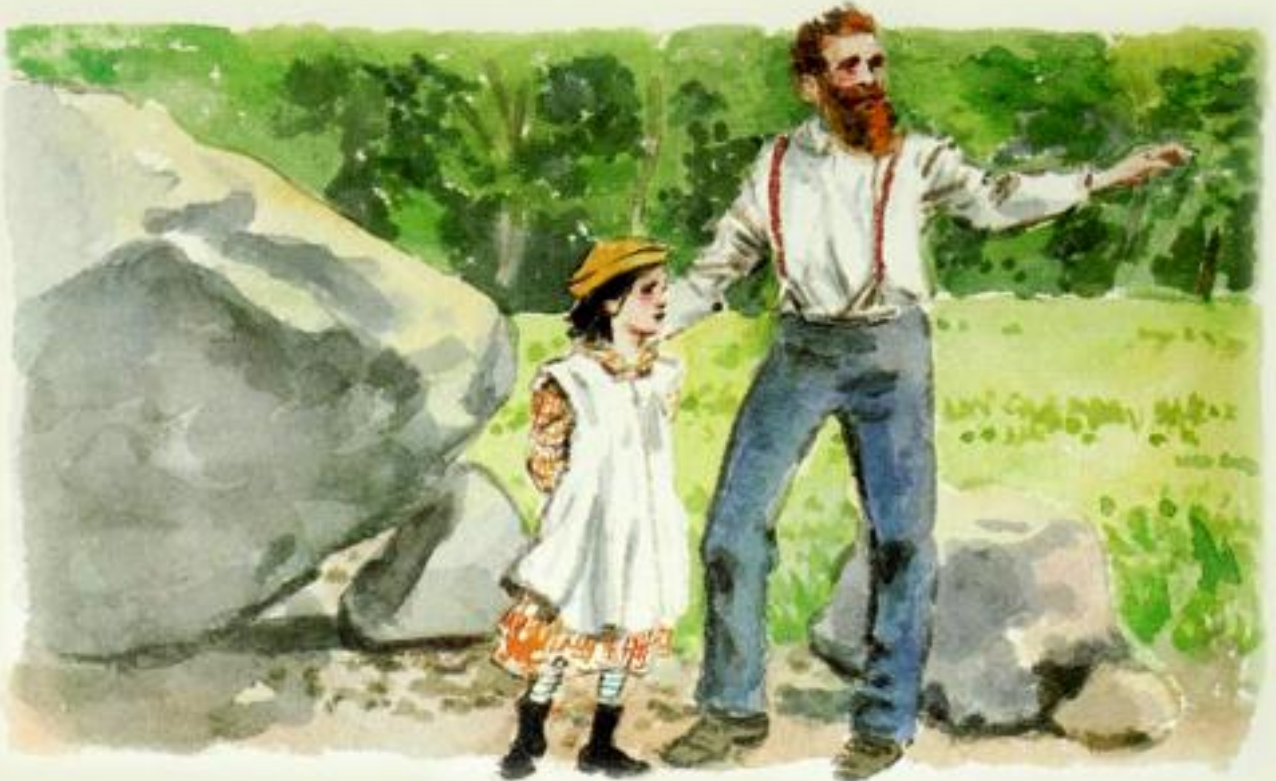
फलॉय ने आँखें उठा कर देखा. “वह हमें देख रहे हैं,” वह बोली.
“वह हम से बातें कर रहे हैं,” म्यूर बोला.
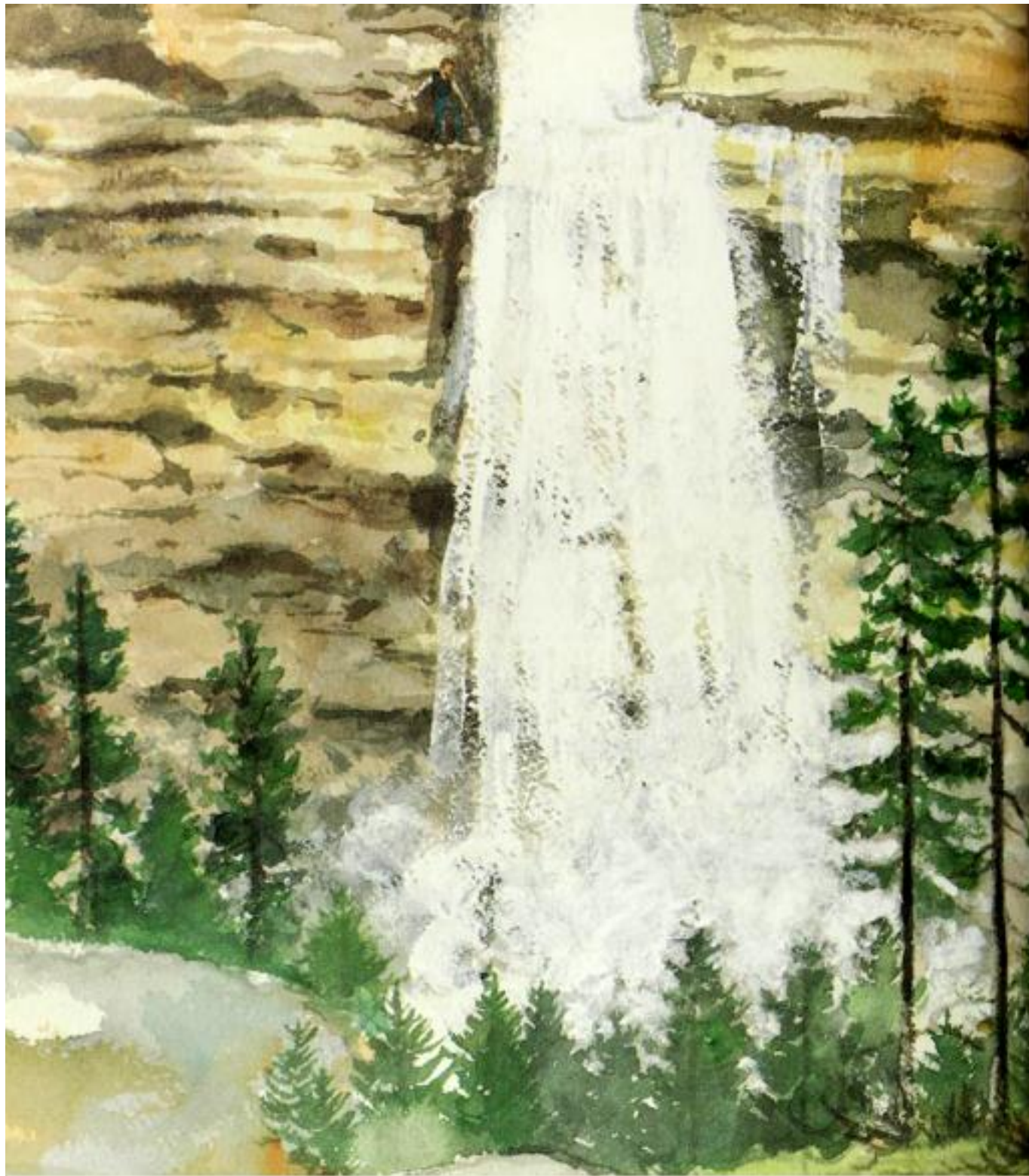
म्यूर का विश्वास था कि वहां के पर्वत और घाटियाँ ग्लेशियरों ने लाखों वर्ष पहले बनाई थीं. जब वह पर्वतों पर चढ़ता था, वह एक कगार से दूसरे कगार पर चढ़ता जाता था जैसे की बादल उसे उठा कर ऊपर ले जा रहे थे. बादलों को वह 'आकाश दूत' बुलाता था.

"मैं ग्लेशियर की बर्फ ढूंढ रहा हूँ," उसने कहा. "बर्फ मेरी बात को सही प्रमाणित कर देगी."
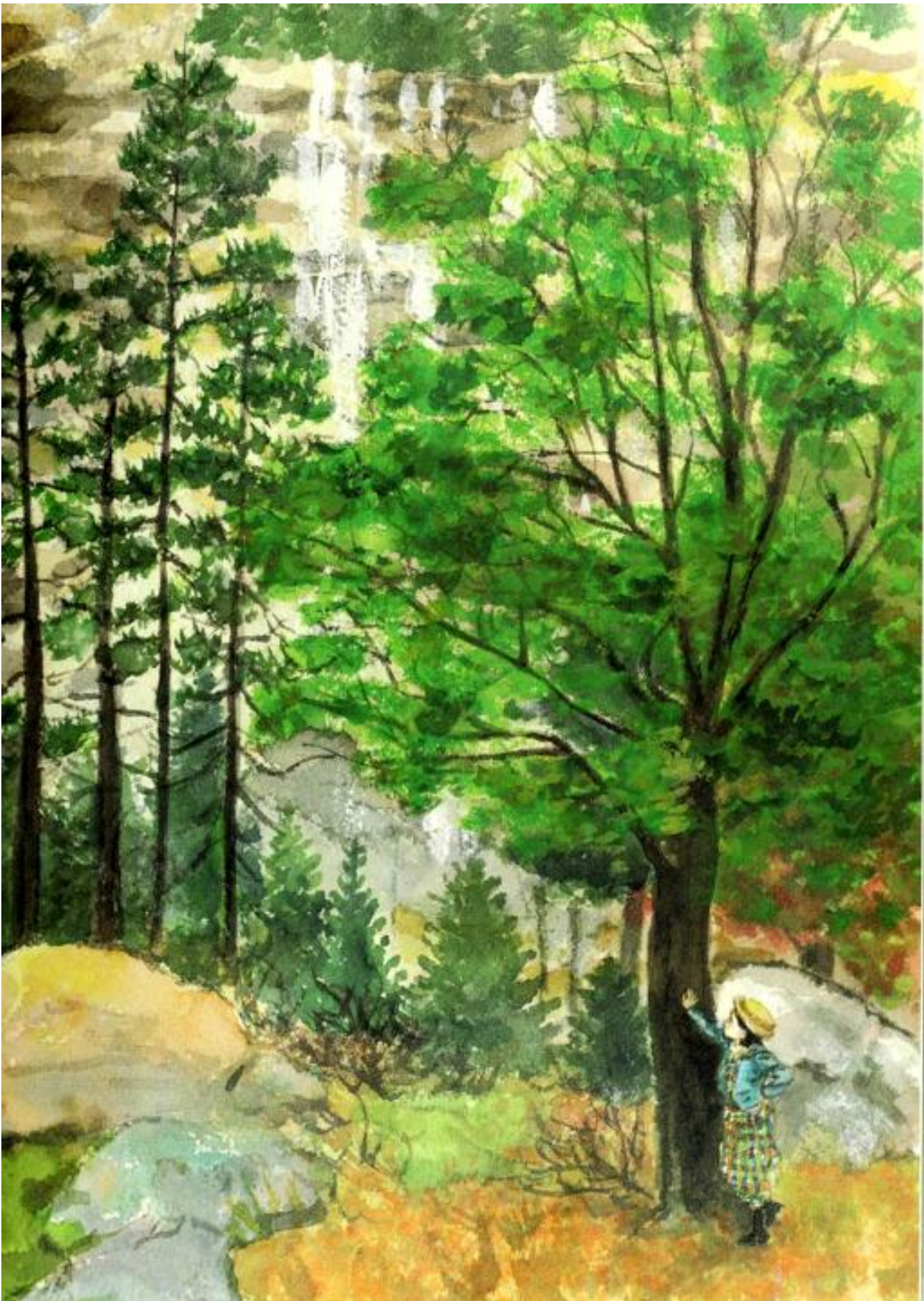
एक दिन जॉन म्यूर फलॉय को जंगल ले गया. वह भालुओं के रास्ते के साथ-साथ चलते रहे. उसने बताया की उत्तरी दिशा में उसने एक जगह खोजी हैं जहाँ से हर तरफ चौकसी रखी जा सकती थी.

“मैंने इसका नाम ‘सनीसाइड बेंच’ रखा है,” उसने कहा. “वहां बैठ कर मैं देर तक देखता रहा और अंत में मैंने देख ही लिया! घाटी में एक ओर से दूसरी ओर तक ग्लेशियर के निशान हैं-ऐसी चट्टानें जो बर्फ की रगड़ से चिकनी हो गयी हैं. उनसे पता लगता है कि योसेमटी घाटी कैसे बनी थी.”

“क्या आप मुझे ‘सनसाइड बेंच’ ले जायेंगे? फलॉय ने पूछा.

“किसी दिन,” म्यूर ने कहा. “जब तुम सक्षम हो जाओगी.”
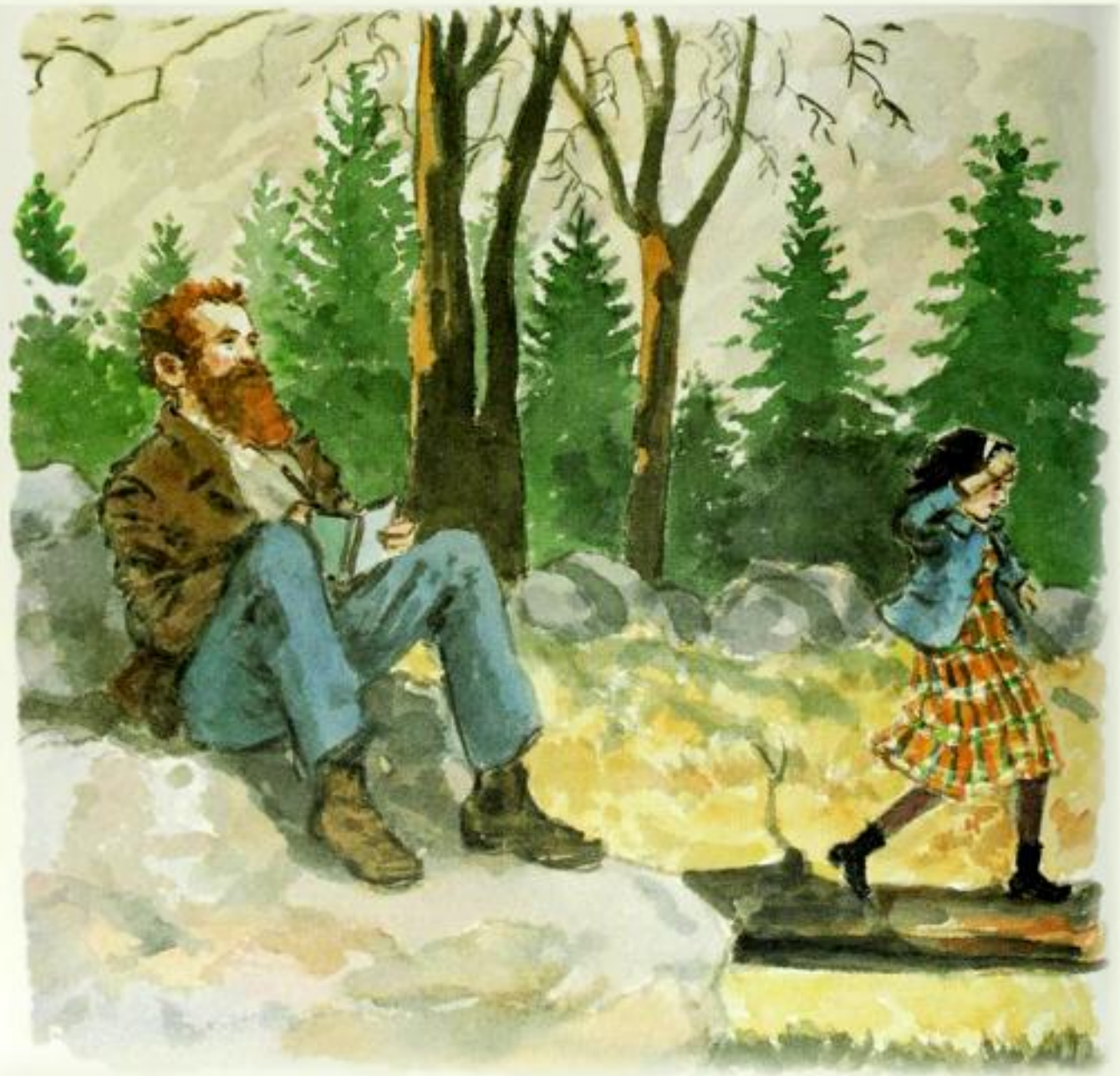
शाम का समय जॉन म्यूर परिवार के साथ बिताता और उस लेख को पूरा करता जिस में ग्लेशियर सिद्धांत की उसने व्याख्या की थी. वह लेख उसने 'न्यू-यॉर्क' अख़बार को भेजा. "क्या पता वह उसे प्रकाशित कर दें," उसने कहा.

पापा ने शिकायत की, "मैं उसे इन मूर्खता पूर्ण बातों पर समय गंवाने के लिये पैसे नहीं देता. वैज्ञानिक कहते हैं कि यहाँ कभी कोई ग्लेशियर नहीं थे. वह म्यूर को जाहिल कह रहे हैं."

लेकिन शीघ्र ही कुछ वैज्ञानिक म्यूर के इस विचार को सही बताने लगे कि योसेमटी घाटी ग्लेशियरों ने ही बनाई थी. पर्यटकों की एक टोली आई. उनके पास अखबारों के कतरने थीं और वह प्रसिद्ध गाइड जॉन म्यूर से मिलने को आतुर थे.

टोली में जो महिलायें थीं वह खूब मुस्करा-मुस्करा कर उसकी प्रशंसा कर रही थीं. म्यूर बहुत ही 'सुंदर' था, बहुत ही 'काव्यात्मक' था, उसका सिद्धांत बहुत ही 'रोचक' था.

फलॉय को लगा की वह सब नासमझ थे. उसे लगा था कि म्यूर उनको कह देगा कि वह बहुत व्यस्त था और उनका गाइड नहीं बन सकता था.

“हाँ, वह नासमझ हैं,” उसने कहा. लेकिन वह योसेमटी घाटी से इतना प्यार करता था कि उसके विषय में बात करने से अपने को रोक न पाता था. फलॉय भी उसके साथ गई.

उसने ग्लेशियर के विषय में बताया और फलॉय से कहा की वहां के पशुओं और पौधों के नाम बताये.

“जब हम प्रकृति में किसी एक वस्तु को चुनते हैं,” उसने पर्यटकों को बताया, “तो हम पाते हैं कि वह अलग-थलग नहीं होती है, सृष्टि में विद्यमान हर चीज़ एक-दूसरे से जुड़ी होती है.”

दो महिलाओं ने बेहोश होने का स्वांग किया. कुछ विलाप करने लगे कि मधुमक्खियों ने काट लिया था, कपड़े फट गये थे, पाँव दुखने लगे थे. लेकिन वापस लौट कर यही लोग सिएरा के प्रतिभावान पुरुष का गुणगान करने लगे थे.

जितने अधिक लोग वहां आकर जेम्स हचिंग्स के बजाय जॉन म्यूर को गाइड बनने के लिये कहते उतना ही पापा क्रोधित होते. आखिरकार उनके सब्र का बाँध टूट गया.

"म्यूर, तुम मेरे कर्मचारी हो!" वह चिल्लाए. "या तो तुम यहां काम करोगे अन्यथा जा सकते हो."

म्यूर ने कहा, "फिर मैं काम छोड़ कर जा रहा हूँ."
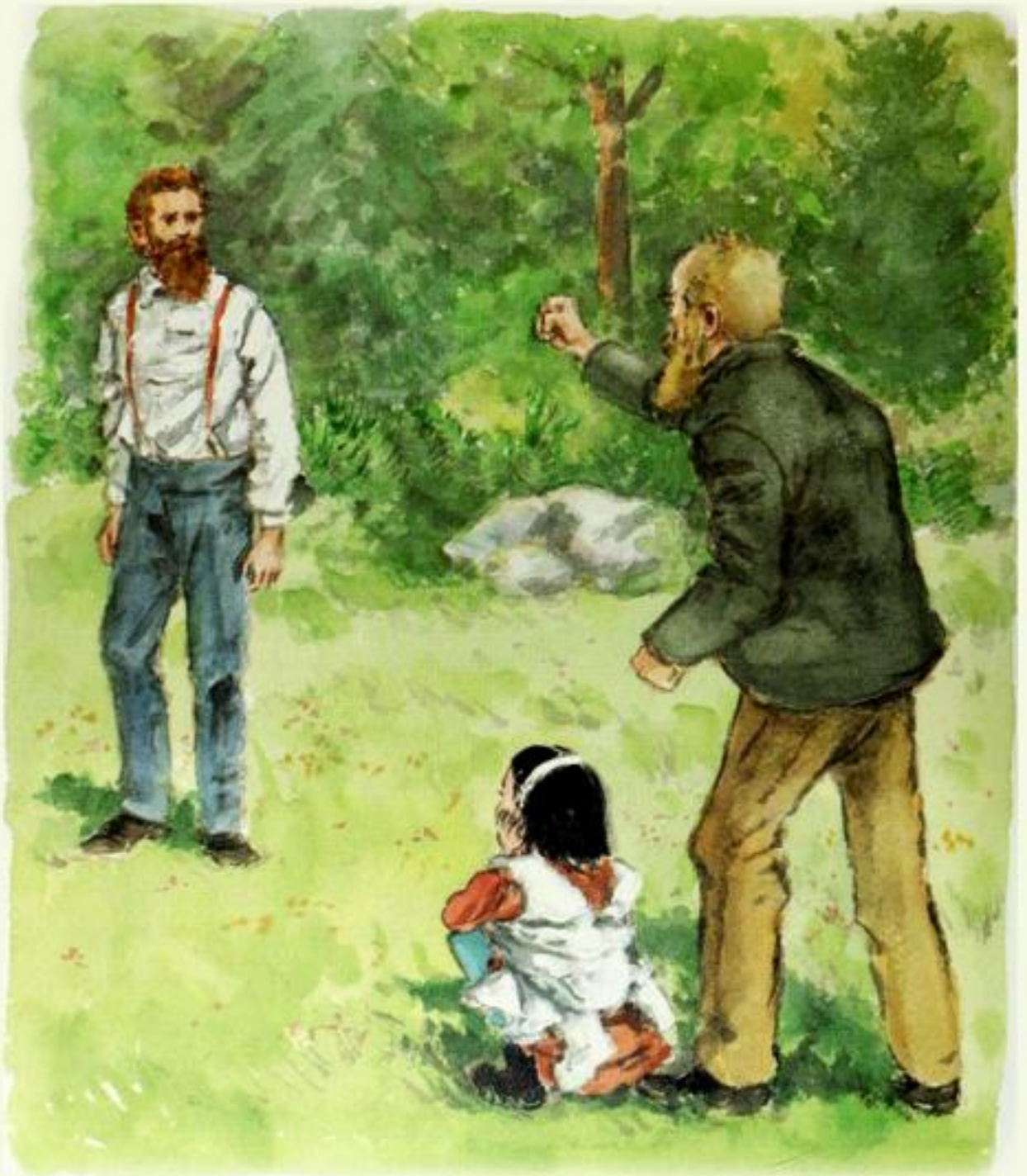
फलॉय उसके पीछे भागी.

“मैं आपको जाने नहीं दूंगी!” उसने कहा.

“मुझे संसार में बहुत सारे काम करने हैं,” वह बोला.

फलॉय उसकी बात समझ गई. वह चिल्लाई, “मैं आप से नफरत करती हूँ.” और भाग गई.
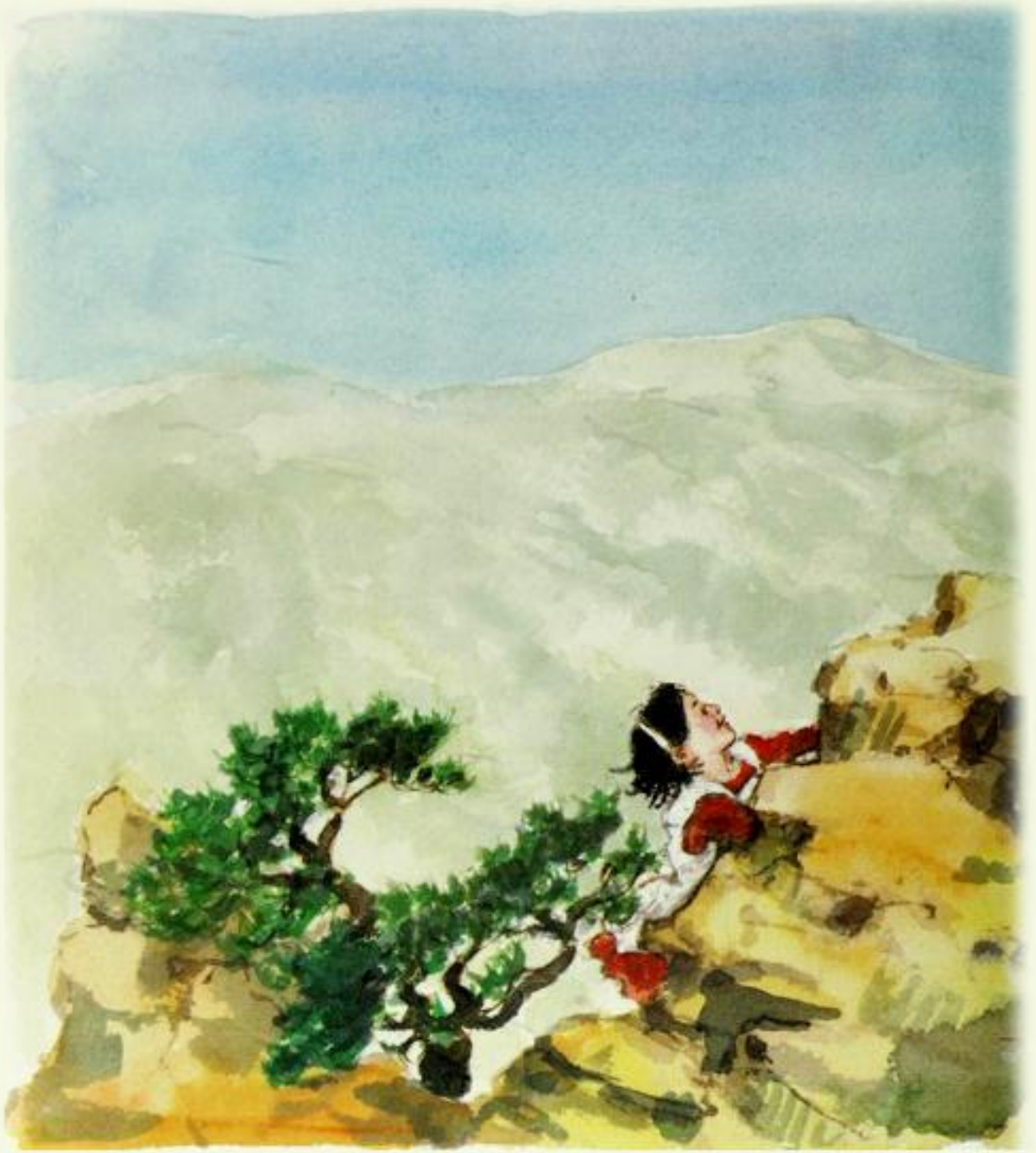
म्यूर उसके पीछे दौड़ा. “आओ, स्किवरल. मेरे पीछे आओ.” उसने अपना हाथ बढ़ाया.

“मैं तुम्हें ‘सनीसाइड बेंच’ दिखाऊँगा. अब वह तुम्हारा होगा.”

फलॉय ने अपने आंसू पोंछे.

“सब कुछ बदल जाता है, फलॉय. यही प्रकृति का पहला नियम है.”

ऊपर जाते समय वह 'हाईलैंड मैरी" गीत गा रहा था. बीच-बीच में वह पुकारता, "स्किवरल, क्या तुम आ रही हो?"

वह उत्तर देती, "हाँ" और अपनी आवाज़ को दूर जाते सुनती.
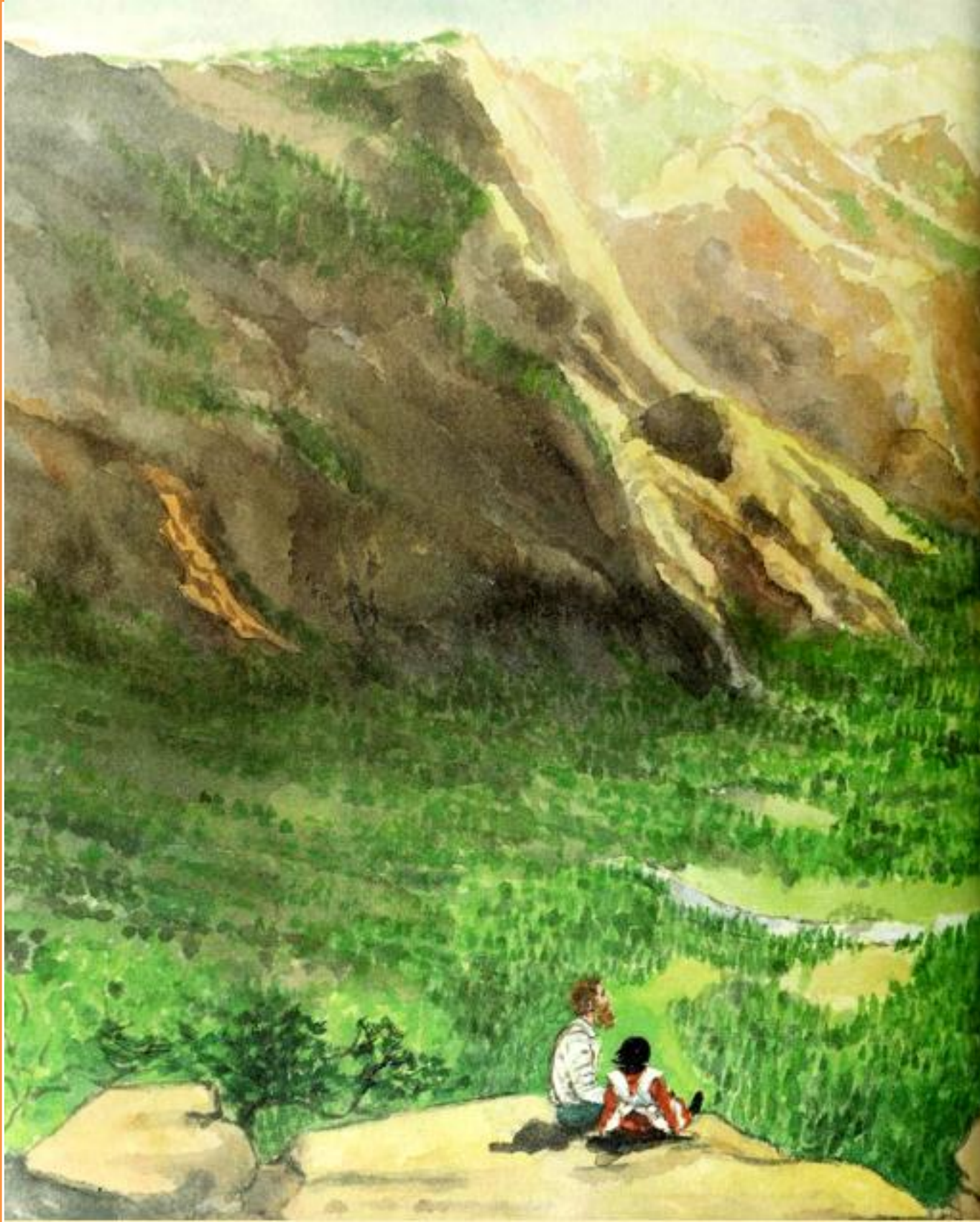
बहुत नीचे घाटी थी. फलॉय के लिये यही सारा संसार था. दूर, धुंध के पार, एक अन्य संसार था जहां से म्यूर आया था और जहां वह लौट रहा था.

"अब तुम्हें यहाँ का रास्ता जानती हो," म्यूर बोला. "मुझे लगता है, यहीं तुम्हें सबसे अच्छे विचार सुझाई देंगे."

वह बहुत समय तक वहां बैठे रहे. दूर क्षितिज में सूर्य अस्त हो रहा था. फिर दोनों, पहाड़ी बकरियों समान चट्टानों पर दौड़ते, कूदते हुए, वापस आये.

समाप्त